भाकृअनुप
ICAR

किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agri search with a human touch

केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान
CENTRAL INSTITUTE FOR SUBTROPICAL HORTICULTURE
ISO : 9001-2015

सी.आई.एस.एच. समाचार

01 जनवरी – 30 जून, 2018 संख्या : 01

निदेशक की कलम से

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान अपने अधिदेश के मद्देनजर निर्यात को ध्यान में रखकर आम की रंगीन किस्मों के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। लोगों में जैव सक्रिय यौगिकों से होने वाले औषधीय गुणों के प्रति धीरे–धीरे जागरूकता बढ़ती जा रही है। संस्थान ऐसे आम की किस्मों के विकास में रत है जिनमें यह यौगिक प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। आम की विभिन्न किस्मों के गूदों के परीक्षण करने पर पता चला कि जैव सक्रिय यौगिकों में भारी विविधता पायी गयी। जहाँ आम की किस्म मल्लिका में फ्लेवोनॉयड एवं कैरोटिनॉयड तत्व की प्रचुरता पायी गयी वहीं लंगड़ा में ऐंटीऑक्सीडेन्ट प्रचुर मात्रा में थी किन्तु कैरोटिनॉयड तत्व कम पाये गये। पिछले कुछ वर्षों में अमरूद का क्षेत्रफल तो बढ़ा है लेकिन उत्पादन में गिरावट दर्ज की गयी। इसका कारण है कि गत 4–5 वर्षों में जड़ ग्रंथ सूत्रकृमि, *मेलाइडोगाइन एंटरेलोबी* का अमरूद के बागों में संक्रमण जिससे पौधों की मृत्यु दर तेजी से बढ़ी है। यह सूत्रकृमि अकेले ही नर्सरी के पौधों एवं छोटे पौधों (1–4 वर्ष) को मार देता है तथा अधिक उम्र के पौधों में उकठा रोग उत्पन्न करता है। उत्तर भारत के आम उत्पादक क्षेत्रों में थ्रिप्स कीट एक बड़ी समस्या के रूप में उभरा है। इसके प्रबंधन की तकनीक विकसित की गयी एवं किसानों के मध्य उपलब्ध करायी गयी। परवल उत्तर भारत की प्रमुख सब्जियों में से एक है किन्तु कम उत्पादकता के चलते यह लोकप्रिय नहीं हो पायी है। संस्थान में परवल के 21 जननद्रव्यों के मूल्यांकन के दौरान 3 उच्च उत्पादकता वाले अभिगमनों को चिन्हित किया गया। इस दौरान कच्चे आम के छिलके से सूप पाउडर का भी विकास किया गया। युवाओं में उद्यमिता विकसित करने के लिए संस्थान ने उन्हें मूल्य संवर्धन, नर्सरी, टिशू कल्चर, मशरूम विविधता एवं संरक्षित खेती में प्रशिक्षित किया। संस्थान ने किसानों की आय दोगुनी करने के विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इसके अतिरिक्त अनेक कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया। पूर्वोत्तर भारत में फल वृक्षों की खेती को बढ़ावा देने हेतु संस्थान ने न केवल प्रशिक्षणों का आयोजन किया बल्कि गुणवत्ता युक्त पौध सामग्री भी उपलब्ध करायी।

शैलेन्द्र राजन

(शैलेन्द्र राजन)

अनुसंधान की विशेषताएँ

आम में पाये जाने मुख्य न्यूट्रास्यूटिकलों की प्रोफाइलिंग

घरेलू और विदेशी बाजारों में आम के जैव सक्रिय पदार्थों के औषधीय गुणों के बारे में जागरूकता फैलाना जरूरी है। रंगीन किस्म के आम में इन तत्वों की प्रचुरता होती है जिससे इन किस्मों के आम का विकास संभव हुआ है। संस्थान में विश्व का सबसे बड़ा आम का जननद्रव्य संग्रह है। आम की तीस संकर किस्मों का विश्लेषण सकल ऐंटीऑक्सीडेन्ट, फिनॉल, फ्लेवोनॉयड एवं कुल कैरोटिनॉयड के लिये किया गया। इन जैव सक्रिय तत्वों में बहुत विविधता पायी गयी। सकल ऐंटीऑक्सीडेंट जहाँ 0.35–1.14 माइक्रोमोल ट्रोलोक्स/100 ग्राम रहा वहीं सकल फिनॉल 23.05–92.08 मिलीग्राम गैलिक अम्ल समतुल्य/100 ग्राम, कुल फ्लेवोनॉयड 11.00–32.0 मिलीग्राम, क्वेरसिटीन समतुल्य/100 ग्राम एवं कैरोटिनॉयड 1.76–15.56 मिलीग्राम/100 ग्राम गूदा पाया गया। सर्वाधिक कैरेटिनॉयड (15.56 मिलीग्राम/100 ग्राम) हाइब्रिड–4509 में जबकि न्यूनतम (1.78 मिलीग्राम/100 ग्राम) हाइब्रिड–707 में पाया गया। आम्रपाली में फ्लेवोनायड एवं कैरोटिनॉयड ज्यादा पाया गया वहीं लंगड़ा में ऐंटीऑक्सीडेंट प्रचुर मात्रा में जबकि कैरोटिनॉयड कम मात्रा में पाया गया।

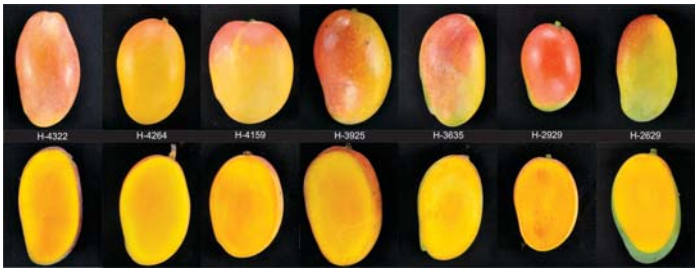

मेलाइडोगाइन इंटेरोलोबी का अमरूद के उकठा रोग से संबंध

आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान में किये गये सर्वेक्षण के पश्चात अमरूद उत्पादन में *मेलाइडोगाइन इंटेरोलोबी* की गंभीर समस्या की पहचान की गयी। इस सूत्रकृमि के प्रकोप से अमरूद के पेड़–पौधों की पौधशालाओं और बागों में बड़े स्तर पर मृत्यु दर्ज की गयी। सूत्रकृमि मुक्त क्षेत्रों में रोग ग्रस्त पौधों के माध्यम से फैलाव के कारण संक्रमित पौधशालाओं को रोग के प्राथमिक फैलाव के लिये जिम्मेदार माना गया। स्थानीय स्तर पर फैलाव के लिये सिंचाई वाले जल, उपयोग में लायी जाने वाली मिट्टी और मानव हस्तक्षेप प्रमुख कारण रहे। रोगी पौधे नये बाग स्थापित करने के लिये लगाये जाने पर अधिकांश पौधे दो साल के अंदर मृत देखे गये। सूत्रकृमि नयी जड़ों में संक्रमण करता है लेकिन मृदा में सूत्रकृमियों की संख्या और जड़ क्षेत्र की परिस्थितियों के अनुसार पौधों पर एक माह से कई वर्ष उपरांत लक्षण प्रकट होते हैं। रोग की

गंभीरता को ध्यान में रखते हुए इस रोग के प्रबंधन हेतु संस्थान द्वारा *ट्राइकोडर्मा हारजियानम* या टी. विरीडी युक्त 5 किलोग्राम कंपोस्ट के साथ 250 ग्राम नीम की खली अथवा 50 ग्राम कार्बोफ्यूरान प्रति पौधा रोपाई के सात दिन पूर्व गड्ढे में प्रयोग की संस्तुति की गयी है। तदुपरांत प्रति वर्ष, वर्षा प्रारंभ होने से पहले ट्राइकोडर्मा युक्त कंपोस्ट तथा नीम की खली का प्रयोग लंबे समय तक बाग को स्वस्थ रखने में सहायक होता है। उक्त पदार्थों की मात्रा बाग की उम्र के अनुरूप बढ़ायी जा सकती है।

परवल के अधिक उत्पादकता युक्त जननद्रव्य की पहचान

पोषक एवं औषधीय गुणों से युक्त होने के कारण परवल एक लोकप्रिय शीतोष्ण सब्जी फसल है। उत्तरीय मैदानी क्षेत्रों में किसानों की यह पसंदीदा सब्जियों में एक है लेकिन प्रचलित प्रजातियों की कम उत्पादकता के कारण इसके क्षेत्रफल में वांछित वृद्धि नहीं हो पायी है। इस समस्या के समाधान हेतु पश्चिम बंगाल प्रांत के मुर्शिदाबाद और मालदा जिलों में, जहाँ परवल की खेती होती है, में सघन सर्वेक्षण एवं चयन कार्यक्रम आयोजित किया गया। चयनित 21 संकलनों के मूल्यांकन उपरांत जननद्रव्य सी. आई.एस.एच.–पी–5 और 3 उच्च उत्पादकता (3.54 तथा 3.49 किलोग्राम प्रति पौधा) के आधार पर सर्वश्रेष्ठ पाये गये। अधिकतम औसत फल भार (65 ग्राम) सी.आई.एस.एच.–पी–4 तथा सी.आई. एस.एच.–पी–5 (56 ग्राम) का पाया गया। दोनों ही जननद्रव्यों के फल अंडाकार एवं पट्टी युक्त, हरे रंग के तथा चमकदार होते हैं। प्रचलित काशी अलंकार प्रजाति की 2.35 किलोग्राम प्रति पौधा उत्पादन क्षमता की अपेक्षा चयनित जनन द्रव्यों की उत्पादकता कहीं अधिक है। इन जननद्रव्यों को किसानों में लोकप्रिय बनाने तथा अधिक उत्पादकता और अधिक शुद्ध लाभ दिलाने हेतु इनके संवर्धन का कार्य प्रगति पर है।

सीआईएसएच–5 खेत में सीआईएसएच–5 सीआईएसएच–3 काशी अलंकार

कच्चे आम के छिल्के का सूप

कच्चा आम अपनी विशिष्ट खुशबू और मुँह में पानी लाने वाले खट्टे स्वाद के लिये जाना जाता है। कच्चे आम में प्रचुर मात्रा में साइट्रिक अम्ल, विटामिन–सी और खनिज लवण होते हैं। इन्हें व्यापारिक स्तर पर अचार, चटनी, पना आदि बनाने में प्रयोग किया जाता है। इन उत्पादों के लिये प्रयोग किये गये आम के छिल्के, इनके उपयोग हेतु तकनीकी के अभाव में व्यर्थ हो जाते हैं। भा.कृ. अनु.प.–सी.आई.एस.एच., लखनऊ द्वारा कच्चे आम के छिल्के से कुछ अन्य अवयवों को मिलाकर सूप पाउडर बनाने की तकनीकी का विकास किया गया है। इस उत्पाद में प्रति 100 ग्राम भार पर 52.6 मिलीग्राम विटामिन–सी और 944 मिलीग्राम फिनोलिक्स उपलब्ध होते हैं। इस पाउडर से तैयार सूप स्वाद और खुशबू में अच्छे होने के साथ–साथ अच्छा घोल बनता है। यह हल्का खट्टा सूप भूख बढ़ाने में सहायक पाया गया है।

केले के फ्यूजेरियम उकठा (टी आर–4) रोग की प्रबंधन तकनीकी का वैज्ञानिक–कृषक संयुक्त मूल्यांकन

''सी.एस.आर–फ्यूजीकोन्ट'' जैविक–उत्पाद के केले के *फ्यूजेरियम ऑक्सीस्पोरम* एफ. एसपी. क्यूबेंस (ट्रोपिकल रेस–4) द्वारा उत्पन्न होने वाले उकठा रोग के फैलाव प्रबंधन में प्रभाव का मूल्यांकन करने हेतु भा.कृ.अनु.प.–सी.आई.एस.एच. तथा भा.कृ. अनु.प.–सी.एस.एस.आर.आई. द्वारा डॉ. एस. के. चौधरी, सहायक महानिदेशक (एन.आर.एम), भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली की अध्यक्षता में एक वैज्ञानिक–कृषक संयुक्त मूल्यांकन कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में डॉ. पी.सी. शर्मा, निदेशक, भा.कृ.अनु.प. –सी.एस.एस.आर.आई, करनाल; डॉ. डी.के. शर्मा, एमेरिटस वैज्ञानिक एवं भूतपूर्व निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–सी.एस.एस.आर. आई; डॉ. एस. राजन, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–सी.आई.एस.एच., लखनऊ; डॉ. वी.के. मिश्र, अध्यक्ष, भा.कृ.अनु.प.–सी.एस.एस.आर. आई., आर.आर.एस, लखनऊ तथा दोनों संस्थानों के वैज्ञानिकों ने सहभागिता की। कृषक प्रक्षेत्रों पर विशेषज्ञों ने कृषकों के साथ वार्ता की। मगाल्सी गाँव में आयोजित की गयी सभा में डॉ. चौधरी, ए.डी.जी. (भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली) ने भा.कृ.अनु.प.–सी.एस.एस. आ.आई. के वैज्ञानिक डॉ. टी. दामोदरन और डॉ. एस. राजन, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–सी.आई.एस.एच. तथा उनके दल को कठिन परिश्रम से इस रोग के प्रबंधन हेतु किये गये प्रयासों की सराहना की। डॉ. एस. राजन, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–सी.आई. एस.एच. ने बताया कि दोनों संस्थानों के अनवरत संयुक्त प्रयास के परिणामस्वरूप रोग प्रबंधन संभव हुआ।

विविध

आदिवासी किसानों का खेड़ीबाड़ी में सम्मेलन

भा.कृ.अनु.प.–सी.आई.एस.एच., आर.आर.एस. मालदा के वैज्ञानिकों ने मालदा में 15 मार्च, 2018 को खेड़ीबाड़ी गांव के जनजातीय किसानों से बातचीत के क्रम में उनके घर के बागीचों के लिये विभिन्न सब्जियों के बीज (बैंगन, मिर्च, लौकी, करेला, कद्दू) के लिए उपयुक्त बताया गया तथा आदिवासी किसानों को इसकी अद्यतन जानकारी प्रदान की।

एस्की के अंतर्गत ग्रीनहाउस ऑपरेटरों को प्रशिक्षण

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ के सुनियोजित कृषि विकास केन्द्र के अंतर्गत दिनांक 15 जनवरी से 14 फरवरी, 2018 तक भारतीय कृषि कौशल परिषद के दिशा–निर्देशों के मद्देनजर 200 घंटों का प्रशिक्षण ग्रीन हाउस ऑपेरटरों के लिये प्रायोगिक फॉर्म में आयोजित किया गया जिससे ग्रीन हाउस उत्पादन तथा प्रबंधन के क्षेत्र में उद्यमिता विकसित की जा सके। देश के अलग–अलग हिस्सों से 30 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। उच्च मूल्य वाली सब्जियों, फूलों तथा नर्सरी उत्पादन में ग्रीन हाउस के बढ़ते महत्व को ध्यान में रखते हुए ग्रीन हाउस ऑपरेटरों की माँग बढ़ी है जो सुरक्षित संरचनाओं को सफलतापूर्वक प्रबंधित कर सकें। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम युवाओं के लिये ग्रीन हाउस ऑपरेटर के रूप में अत्यंत ही लाभकारी है।

बागवानी उद्यमिता सेमिनार

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ में कार्ड के सहयोग से 19 जनवरी, 2018 को एक दिवसीय बागवानी उद्यमिता सेमिनार का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन उत्तर प्रदेश सरकार के प्रमुख सचिव (बागवानी), श्री सुधीर गर्ग ने किया। डॉ. अनीस अंसारी चेयरमैन, कार्ड, डॉ. शैलेन्द्र राजन, निदेशक, सी.आई.एस.एच, श्री रवीन्द्र रॉय, सहायक महाप्रबंधक, नाबार्ड, सुश्री मीरा चक्रवर्ती, क्षेत्रीय प्रबंधक तथा सी.आई.एस.एच. एवं अन्य संस्थानों के वैज्ञानिकों ने हिस्सा लिया। सेमिनार के दौरान उद्यमिता विकास के क्षेत्र में टीश्यू कल्चर, ग्रीन हाउस खेती, हाईटेक नर्सरी तथा मूल्यसंवर्धन के क्षेत्र में उद्यमिता विकास पर तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया जिसमें 70 विशेषज्ञ, उद्यमी तथा बैंकर सम्मिलित हुए। राज्य सरकार के अधिकारियों, बैंकरों तथा प्रतिनिधियों के बीच बागवानी उद्यमिता के विभिन्न क्षेत्रों में वित्तीय सहायता कैसे उपलब्ध की जाती है पर चर्चा की गयी। सेमिनार में उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के संभावित बागवानी उद्यमी सम्मिलित हुए। इस अवसर पर कानूनी मुद्दे, पंजीकरण तथा सरकारी क्लीयरेन्स जो वित्तीय सहायता के लिये जरूरी है को अलग–अलग संसाधन विशेषज्ञों ने बताया।

मूल्य संवर्धन, नर्सरी एवं टिश्यू कल्चर पर बागवानी उद्यमिता सेमिनार

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ ने एस.डी.एस.एच. तथा कार्ड के सहयोग से 12 फरवरी, 2018 को बागवानी उद्यमिता सेमिनार का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन मिसरिक की माननीय सांसद श्रीमती अंजू बाला द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के विभिन्न हिस्सों के 154 संभावित उद्यमियों ने हिस्सा लिया। सेमिनार में उद्यमिता विकास के मूल्य संवर्धन, नर्सरी, ग्रीन हाउस तथा टिश्यू कल्चर पहलूओं पर विशेष बल दिया गया। अनुसंधान संस्थानों के विशेषज्ञों तथा उद्योग एवं राज्य सरकार के अधिकारियों ने व्यापार शुरू करने के लिये चार महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर विस्तृत जानकारी दी। डॉ. शैलेन्द्र राजन, निदेशक, सी.आई.एस.एच. ने इस अवसर पर बागवानी फसलों में उद्यमिता विकास में पौधशाला विषय पर व्याख्यान दिया। प्रतिभागियों को सी.आई.एस.एच. नर्सरी, पॉलीहाउस, प्रसंस्करण हॉल तथा टिश्यू कल्चर प्रयोगशाला दिखाया गया।

कृषि–जैविविधता प्रदर्शनी

संस्थान ने अपने रहमानखेड़ा स्थित परिसर में आम, अमरुद, जामुन, बेल, सेम तथा आंवला किस्मों की संकलित की हुई जैव विविधता को प्रदर्शित किया। संस्थान द्वारा प्रयास किया जा रहा है कि समुदायों की मदद से किसानों की किस्मों को संरक्षित किया जाये। इस प्रदर्शनी में 400 किसान सम्मिलित हुए।

माननीय प्रधानमंत्री के भाषण का सजीव प्रसारण

माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने 16–18 मार्च, 2018 से भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नयी दिल्ली द्वारा आयोजित कृषि उन्नति मेला, 2018 के अवसर पर देश में 25 नये कृषि विज्ञान केन्द्रों का उद्घाटन किया। इस अवसर पर, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान ने किसानों के लिये माननीय प्रधानमंत्री के भाषण के लाइव प्रसारण की व्यवस्था की। साथ ही संस्थान का स्टॉल लगाया गया जिसमें संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियां प्रदर्शित की गयी। पूरे देश के 500 से अधिक किसानों और बागवानों को माननीय प्रधानमंत्री के भाषण को सुनने के लिये संस्थान में आमंत्रित किया गया। जिसमें आकर किसानों ने संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों का ज्ञान लिया और उन्हें अपनाने की उत्सुकता दिखायी।

टेडेक्स में व्याख्यान दिया गया

डॉ. शैलेन्द्र राजन ने 'फलों के राजा आम' पर 20 जनवरी, 2018 को 'किंग ऑफ फ्रूट्स मैंगो एण्ड द क्राफ्ट दैट गोज इनटू क्रियेटिंग न्यू वेराइटिज' व्याख्यान दिया। टेडेक्स एक मंच प्रदान करता है जहाँ अनेक सफल उद्यमी, सामाजिक कार्यकर्ता, कलाकार, इंजीनियर, डॉक्टर इत्यादि अपने अनुभव साझा करते हैं।

सीमैप में किसान मेला

संस्थान ने सी.एस.आई.आर.–केन्द्रीय औषधीय एवं सुगंध पौध संस्थान, लखनऊ में 31 जनवरी, 2018 को आयोजित किसान मेला में अपनी प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित किया। किसान मेला का उद्घाटन भारत सरकार के माननीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री, श्री गिरिराज सिंह द्वारा किया गया। उत्तर प्रदेश सरकार के कृषि मंत्री, श्री सूर्य प्रताप शाही भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

आई.सी.ए.आर.–सी.आई.एस.एच. आत्मा अधिकारियों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

सी.आई.एस.एच.–के.वी.के. तथा सी.आई.एस.एच.–आर.आर.एस. मालदा ने आत्मा अधिकारियों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में अधिकारियों की जानकारी के उन्नयन हेतु 1 से 3 फरवरी, 2018 तक तीन दिवसीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन उप निदेशक (प्रशासन) के सहयोग तथा राजकीय नोडल अधिकारी के वित्तीय सहयोग से किया गया। इस कार्यक्रम में 15 अलग–अलग ब्लाको के आत्मा के 50 अधिकारी सम्मिलित हुए जिससे कि भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे कोर्सो सम्बंधी अलग–अलग प्रौद्योगिकियों को अद्ययायित किया सके। यह देखा गया है कि आत्मा अधिकारी योजनाओं को अपने अन्य कर्मिकों के माध्यम से नीचे के स्तर तक क्रियान्वित करते हैं ।

उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में आम में होने वाले कीट एवं रोगों की स्थिति

डॉ. पी.के. शुक्ल तथा डॉ. गुंडप्पा ने 01 से 15 अप्रैल, 2018 तक उत्तर प्रदेश के हरदोई, बदायूं, संभल, मेरठ, मुज़फ्फरनगर, बागपत, शामली, सहारनपुर, हरिद्वार, बिजनौर, अमरोहा, मोरादाबाद, रामपुर, तथा बरेली जिलों के आम में होने वाले कीटों एवं रोगों का सर्वेक्षण किया। उन्होंने बताया कि पारिस्थितिकी में संतुलन बना रहना बहुत महत्वपूर्ण है तभी कीट एवं रोग प्रबंधन किया जा सकता है।

नरेन्द्र देव कृषि विश्वविद्यालय में किसान मेला

संस्थान ने 5 से 6 अप्रैल, 2018 तक फैजाबाद स्थित नरेन्द्र देव कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित राज्य स्तरीय किसान मेंला में अपने यहाँ विकसित प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के माननीय कृषि मंत्री श्री सूर्य प्रताप शाही मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर किसानों ने संस्थान के स्टाल का भ्रमण किया तथा मूलवृंतों की उपलब्धता, आम में अनुत्पादकता, आम तथा अमरूद के एच.डी.पी., आम तुड़ाई तकनीकों, आम तोड़क यंत्र, एफिड का नियंत्रण, भुनगा, पाउडरी मिल्ड्यू, एंथ्रेकनोज, डाइबैक आदि विषयों की जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर अनेक नये उद्यमियों ने नर्सरी लगाने तथा फल आधारित प्रसंस्करण इकाई स्थापित करने में रूचि दिखायी।

आजीविका एवं कौशल विकास दिवस

संस्थान में 5 मई, 2018 को लखनऊ के बाबू त्रिलोकी सिंह इंटर कालेज तथा बड़ी गढ़ी नामक गाँव में ग्राम स्वराज अभियान के अंतर्गत आजीविका एवं कौशल विकास दिवस का आयोजन किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों को उनकी आजीविका में सुधार लाने तथा कौशल विकास की जानकारी दी गयी। वैज्ञानिकों ने संस्थान में विकसित गुणवत्ता वाले पौध सामग्री के उत्पादन, उपयुक्त अंतः फसलें, मुधुमक्खी पालन तथा आम के बागों में कुक्कुट पालन प्रौद्योगिकियों की चर्चा की जिससे कि आय में बढ़ोत्तरी की जा सके। विद्यार्थियों को कीट के नियंत्रण के लिये विवेकपूर्ण कीटनाशियों के बारे में भी बताया गया। लखनऊ के बाबू त्रिलोकी सिंह इंटर कालेज के कक्षा 12 के 60 विद्यार्थियों तथा संकाय सदस्यों ने हिस्सा लिया।

बड़ी गढ़ी गाँव में सहभागियों को आय बढ़ाने तथा परिवार के पोषण सुरक्षा के लिये सब्जियों, फलों, फूलों संबंधी नर्सरी प्रबंधन, छत पर बागवानी तथा घर के पिछले हिस्से में बागवानी, तुड़ाई उपरांत प्रबंधन तथा आम के मूल्य संवर्धन उत्पदों को तैयार करने संबंधी जानकारी प्रदान की। इस कार्यक्रम में 30 बागवान सम्मिलित हुए।

35वाँ स्थापना दिवस समारोह

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी, लखनऊ ने 01 जून, 2018 को अपना 35वाँ स्थापना दिवस मनाया। डॉ. के.के. लाल, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे अपने संबोधन में उन्होंने किसानों को सलाह दी कि अपनी आय बढ़ाने के लिए बागवनी फसलों के साथ मत्स्य को एकीकृत कर कार्य किये जाने की आवश्यकता है। केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ द्वारा किसानों की आय दुगुनी करने की दिशा में किया जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए डॉ. लाल ने आशा व्यक्त की कि भविष्य में दोनों संस्थान किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में कार्य करेंगे।

इस अवसर पर डॉ. शैलेन्द्र राजन, निदेशक ने किसानों को संस्थान की उपलब्धियों की जानकारी दी। उन्होंने आगे बताया कि संस्थान अनुसंधान एवं प्रसार के माध्यम से फसल उत्पादन को बढ़ाने तथा बागवानी फसलों को पैदा करने वाले किसानों के जीवन को उन्नत करने के प्रति समर्पित है। स्थापना दिवस समारोह के अंतर्गत एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत किसानों को बताया गया कि वे कैसे तुड़ाई उपरांत होने वाली हानियों को कम कर अपनी आय बढ़ा सकते हैं। गोष्ठी के दौरान संस्थान के वैज्ञानिकों ने किसानों की समस्याओं को सुना तथा उनके निवारण के लिये सुझाव दिये। वैज्ञानिक किसान वार्ता के अंतर्गत तुड़ाई, पकवन, पैकेजिंग तथा यातायात परिचर्चा के मुख्य बिन्दु रहे।

प्रधानमंत्री का किसानों को संबोधन

भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 20 जून, 2018 को उन किसानों से बात की जिन्होंने अपनी आय दोगुनी की है। प्रधानमंत्री की इस वार्ता कार्यक्रम को संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा आस–पास रहने वाले किसानों ने भी सुना। इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने पश्चिम बंगाल, गुजरात, राजस्थान तथा मणिपुर राज्यों के किसानों से वार्ता की। प्रधान मंत्री महोदय के वार्ता कार्यक्रम को संस्थान के ऑडीटोरियम में 200 से अधिक अधिकारियों, कर्मचारियों एवं किसानों ने देखा।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून, 2018) के अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने योग किया। श्री धीरज शर्मा, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को योग करवाया। योग कार्यक्रम की शुरूआत ऊँ मंत्र के उच्चारण से प्रारंभ हुआ। इसके बाद पदमासन, वज्रासन, सुखासन और सिद्धासन किया गया। तत्पश्चात सभी ने कपालभाति एवं मंडूक आसन किया। अनुलोम–विलोम का भी सभी ने अभ्यास किया।

इस अवसर पर डॉ. शैलेन्द्र राजन, निदेशक ने मानव जीवन में योग की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वस्थ शरीर एवं मन के लिये योग आवश्यक है। कार्यक्रम के अन्त में सभी ने हास्यासन किया।

किसानों की आय दोगुनी करने पर राष्ट्रीय सम्मेलन

भा.कृ.अनु.प–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ ने उपोष्ण बागवानी समिति के साथ मिलकर 21 से 22 जून, 2018 तक उपोष्ण क्षेत्र में बागवानी प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों की आय दुगुनी करने संबंधी कार्यनीति एवं चुनौतियों पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस राष्ट्रीय सम्मेलन में 10 राज्यों के 28 शहरों के प्रतिनिधि एवं किसान सम्मिलित हुए तथा उन्होंने आम, अमरूद, लीची, आँवला, बेल, स्ट्राबेरी, केला, नींबू, अंगूर, जामुन, वन वृक्षों, औषधीय एवं सुगन्ध फसलें, मसालों, सब्जियों तथा मशरूम पर विकसित प्रौद्योगिकियों को प्रस्तुत किया। सम्मेलन के दौरान बागवानी

फसल उत्पादन एवं संरक्षण के सभी पहलुओं पर चर्चा की गयी जिसमें उन्नत प्रजाति, वृक्ष प्रबंधन, तुड़ाई उपरांत रख–रखाव तथा अवशिष्ट का उपयोग शामिल थे। डॉ. आर.सी. श्रीवास्तव, कुलपति राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय मुख्य अतिथि थे जबकि सहायक महानिदेशक बागवानी विज्ञान, डॉ. डब्ल्यू.एस. ढिल्लो तथा स्वामी विश्वमयानन्द जी संचालक राम कृष्ण आश्रम सरगाची विशिष्ट अतिथि थे। इस अवसर पर देश के पाँच प्रसिद्ध बागवानी विशेषज्ञों को एस.डी.एस.एच फैलों प्रदान किया गया।

महत्वपूर्ण बैठकें

डस की वार्षिक समीक्षा बैठक आयोजित

संस्थान में दिनांक 15 से 17 जनवरी, 2018 तक भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में डस की वार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डॉ. शैलेन्द्र राजन ने फल फसलों में डस के परीक्षणों को ऑन साइट कर उनका मानकीकरण किये जाने पर जोर दिया जिससे कि परीक्षण दो वर्षों में ही पूरा हो जाये। यह परीक्षण युवा पौधों में अधिक समय लेते

हैं। आम, कागजी नींबू तथा अखरोट किस्मों के ऑन साइट प्रमाणीकरण प्रगति पर बैठक के दौरान समीक्षा की गयी। बैठक के दौरान यह महसूस किया गया कि संस्थान को किसानों की किस्मों को पंजीकरण करवाने में सहायता प्रदान करनी चाहिये।

ए.आई.सी.आर.पी. फलों पर पंचवर्षीय समीक्षा बैठक

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान में 11 से 13 अप्रैल, 2018 तक आम, अमरूद तथा लीची पर ए.आई.सी.आर.पी. (फलों) की पंचवर्षीय समीक्षा दल की बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक का उद्देश्य स्थान एवं आवश्यकता आधारित कृषि जलवायु परिस्थिति के मद्देनजर विकसित की गयी प्रौद्योगिकियों का परीक्षण कर उनको संस्तुत करना था। पंचवर्षीय समीक्षा टीम की बैठक डॉ. शैलेन्द्र राजन, निदेशक के स्वागत भाषण से प्रारंभ हुआ। इस टीम के अध्यक्ष पदमश्री डॉ. के.एल. चड्ढा थे। इसके अन्य सदस्य थे डॉ. एस. मैती, डॉ. डी.एस. खुरदिया, डॉ. बी.एम.सी रेड्डी तथा डॉ. वी.एस. ठाकुर। इस अवसर पर परियोजना समन्वयक, डॉ. प्रकाश पाटिल, भा.कृ.अनु.प.–भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बैंगलूरू ने ए.आई.सी.आर.पी फलों पर विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। आम, अमरूद तथा लीची फलों के विभिन्न पहलुओं पर काम करने वाले भारत के 40 वैज्ञानिकों ने इसमें भाग लिया तथा 2011–2017 के दौरान किये गये अलग–अलग परीक्षणों के विभिन्न पहलुओं पर समीक्षा की गयी। इस बैठक के दौरान कुल मिलाकर आम, अमरूद तथा लीची के 80 परीक्षणों पर व्यापक चर्चा की गयी।

23वीं अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक

अनुसंधान सलाहकार समिति की 23वीं बैठक डॉ. बी.एस. चुंडावत, पूर्व कुलपति, नौसारी कृषि विश्वविद्यालय, गुजरात की अध्यक्षता में 26 से 27 जून 2018 को संपन्न हुई। डॉ. के.के. जिंदल, पूर्व सहायक महानिदेशक (उद्यान विज्ञान), डॉ. एन.एस. पस्रिचा, पूर्व अध्यक्ष, मृदा विज्ञान विभाग, पी.ए.यू., लुधियाना, डॉ. प्रेम शंकर सिंह, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, कीट विज्ञान विभाग बी.एच.यू., वाराणसी, डॉ. सी. अवस्थी, पूर्व अध्यक्ष, जैव प्रौद्योगिकी संभाग, भाकृअनुप–आई.आई.एच.आर., बैंगलूरु एवं डॉ. डब्ल्यू. एस. ढिल्लन, सहायक महानिदेशक (उद्यान विज्ञान) भाकृअनुप, नई

दिल्ली ने संस्थान के निदेशक, विभागाध्यक्षों तथा वैज्ञानिकों के साथ सहभागिता की।

समूहिक भ्रमण

पुडूचेरी के किसानों एवं अधिकारियों का भ्रमण

पुडूचेरी के 20 किसानों तथा 05 अधिकारियों ने 02 अप्रैल, 2018 को संस्थान द्वारा विकसित की गयी आम एवं अमरूद की खेती से संबंधित नवीनतम प्रौद्योगिकियों को जानने के लिए संस्थान का भ्रमण किया। उनके भ्रमण के दौरान उन्हें संस्थान की प्रौद्योगिकियों की जानकारी दी गयी तथा उनके द्वारा आम एवं अमरूद की खेती से संबंधित समस्याओं का समाधान बताया गया। भ्रमणकारी किसानों ने अति सघन बागवानी देखकर खुशी जतायी। किसानों ने यह आश्वासन दिया कि वे अपने क्षेत्र में जाकर नर्सरी विकसित करेंगे तथा संस्थान के वैज्ञानिकों से प्राप्त प्रशिक्षण के उपरांत अपने यहाँ के अन्य किसानों को लाभान्वित करेंगे।

बांदा के विद्यार्थियों का भ्रमण

बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिकि विश्वविद्यालय के फल प्रजनन के 45 विद्यार्थियों ने 21 अप्रैल, 2018 को अपनी जानकारियों को अध्यायित करने के लिए संस्थान का भ्रमण किया। इस अवसर पर डॉ. शैलेन्द्र राजन, निदेशक ने विद्यार्थियों को भारत में पैदा किये जा रहे प्रमुख फलों के उत्पादन के प्रजनन संबंधी विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान दिया। उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा कि विद्यार्थियों का यह भ्रमण उनकी प्रायोगिक समझ तथा नयी किस्मों की ग्राफ्टिंग के वैज्ञानिक पहलुओं को समझने में लाभकारी होगा। भ्रमणकारी विद्यार्थी ट्रांसजनिक पपीता के क्षेत्र में किए जा रहे नवीनतम विकास को जानकर खुश हुए तथा उन्हें फल फसलों के विकास के लिए आण्विक प्रजनन के इस्तेमाल की भी जानकारी प्रदान की गयी। इस अवसर पर डॉ. मनीष मिश्र, प्रधान वैज्ञानिक एवं डॉ. अंजू बाजपेई, प्रधान वैज्ञानिक ने जैव प्रौद्योगिकी पर व्याख्यान दिया।

सी.एम.एस. लखनऊ के विद्यार्थियों का शैक्षणिक भ्रमण

लखनऊ के प्रसिद्ध सीटी मॉनटेसरी स्कूल, स्टेशन रोड के 12वीं कक्षा के 50 विद्यार्थियों ने अपने पाँच शिक्षकों के नेतृत्व में 08 मई, 2018 को शैक्षणिक भ्रमण के अंतर्गत संस्थान का भ्रमण किया। भ्रमणकारी विद्यार्थियों का समन्वयन डॉ. वी.के. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा किया गया। उन्होंने अपने संबोधन में विद्यार्थियों को भारत में व्याप्त विविध फल–फसलों की जानकारी देकर उनका ज्ञानवर्धन किया तथा संस्थान द्वारा आम तथा अमरूद अधिदेशित फल–फसलों के जर्मप्लाज्म संरक्षण के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों की

जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर डॉ. मुत्थु कुमार एम., वैज्ञानिक ने जीनोमिक्स परिपेक्ष्य तथा फल–फसलों के आण्विक प्रजनन के विषय में बताया। उन्होंने विद्यार्थियों को बागवानी जैव प्रौद्योगिकी में रोजगार के अवसर की भी जानकारी प्रदान की।

ग्रामीण स्वराज अभियान

पंचायती राज दिवस

संस्थान ने 24 अप्रैल, 2018 को लखनऊ जिला के अमेठिया सलीमपुर, मुईद्दीनपुर तथा नेजाभारी खेरा पंचायत में ग्राम स्वाराज अभियान के तहत पंचायती राज दिवस मनाया। इस अवसर पर पंचायती राज से संबंधित कर्मियों को सरकार द्वारा चलाए जा रहे अनेक कार्यक्रमों के विषय में अवगत कराया गया। ग्राम पंचायतों से निवेदन किया गया कि टीकाकरण एवं स्वास्थ्य, महिला शसक्तीकरण, समाजिक विकास आदि सामाजिक विषयों पर ग्राम सभा आहूत कर चर्चा करनी चाहिए।

ग्राम स्वराज दिवस

संस्थान ने 24 अप्रैल, 2018 को ग्राम स्वराज अभियान के अंतर्गत लखनऊ जिला के संन्यासी बाग कनार पंचायत में ग्राम स्वराज दिवस मनाया। भारत सरकार ने बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर की जयंती पर 14 अप्रैल को ग्राम स्वराज अभियान प्रारंभ किया था जिसे सामाजिक न्याय दिवस के रूप में मनाया गया। इसका मुख्य उद्देश्य देश के पिछड़े गाँवों के सीमांत लोगों को कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ना है। इसके पश्चात स्वच्छ भारत दिवस, उज्जवला दिवस, पंचायती राज दिवस तथा ग्राम शक्ति दिवस भी मनाया गया। इस कार्यक्रम में 25 किसानों के अलावा प्रधान, लेखपाल, वीडियो, बी.डी.सी. जैसे पंचायत अधिकारी भी सम्मिलित हुए।

किसान कल्याण दिवस

संस्थान ने 02 मई, 2018 को ग्राम स्वराज अभियान के अंतर्गत लखनऊ जिला के सैदपुर गाँव में किसान कल्याण दिवस मनाया। इस अवसर पर जागरूकता अभियान तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसने कीटनाशी एवं फफूँद नाशी के विवेकपूर्ण उपयोग से संबंधित जानकारी प्रदान की गयी ताकि आम में कीट एवं रोग प्रबंधन किया जा सके, उपयुक्त फसलों के साथ अंतः फसलें पैदा की जा सके, आम के बागों में मधुमक्खी पालन किया जा सके तथा कुक्कुट पालन की मदद से 2022 तक किसानों की आय को दुगुनी की जा सके। इस कार्यक्रम में सैदपुर गाँव के 25 किसान सम्मिलित हुए।

कार्यशालाएँ

कृषि प्रौद्योगिकियों के प्रसार के लिए प्रदर्शन विधियां

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ में 02 फरवरी, 2018 को कृषि प्रौद्योगिकियों के प्रसार के लिए प्रदर्शन विधियों पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए डॉ. शैलेन्द्र राजन, निदेशक ने भारत में कृषि आधारित संग्रहालयों पर व्याख्यान दिया तथा बताया कि कैसे संग्रहालय प्रौद्योगिकियों के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

ग्राम स्वराज अभियान के तहत किसान कल्याण कार्यशाला

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ ने 02 मई, 2018 को मलिहाबाद तथा काकोरी ब्लॉकों के किसानों के लिए आयोजित किसान कल्याण कार्यशाला में भाग लिया। इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मोहनलाल संसदीय क्षेत्र के माननीय सांसद श्री कौशल किशोर जी ने की। अपने संबोधन के दौरान डॉ. शर्मा ने बताया कि किस प्रकार ग्रामीण स्तर पर पूर्व में किए गए कार्यों से अब किसान लाभान्वित हो रहे हैं। माननीय सांसद, श्री कौशल किशोर जी ने अपने संबोधन में गरीबों के उन्नयन के लिए उठाए जा रहे कदमों की चर्चा की तथा बताया कि किस प्रकार विविध बीमा व्यवस्थाएँ तथा वित्तीय समर्थन ने लोगों के दृष्टिकोण का बदला है।

किसान वैज्ञानिक अंतः संवाद इस कार्यक्रम का एक मुख्य घटक था। इस कार्यक्रम के दौरान किसानों के लिए हितकारी अनेक बुकलेट वितरित किए गए।

दूधिया मशरूम की खेती पर प्रशिक्षण

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ में 21 मार्च, 2018 को दूधिया मशरूम की खेती पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उत्तर प्रदेश के पाँच जिलों से 10 ग्रामीण महिलाओं सहित 150 किसानों ने इसमें भाग लिया। इस अवसर पर किसानों को अपने उत्पाद की गुणवत्ता बढ़ाने संबंधी जानकारी प्रदान की गयी तथा साथ ही यह भी बताया गया कि मशरूम का रंग सफेद अधिक समय तक कैसे रखा जाए तथा इसमें ताजगी कैसे कायम रखी जाए।

वैयक्तिक

कार्यग्रहण

प्रशासन

- श्री सुलभ सिंह सेंगर, सहायक ने 22 मार्च 2018, को मणिपुर के तमेंगलौंग स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र से स्थानान्तरण उपरान्त संस्थान में कार्य ग्रहण किया।

- सुश्री ज्योति मीणा ने 13 जून, 2018 को संस्थान में तकनीकी सहायक (टी–3) के पद पर चयनोपरान्त कार्य ग्रहण किया।

- श्री सुमित कुमार सोनी ने 19 जून, 2018 को संस्थान में तकनीकी सहायक (टी–3) के पद पर चयनोपरान्त कार्य ग्रहण किया।

पदोन्नति

- डॉ. पी.के. शुक्ल, वरिष्ठ वैज्ञानिक को 19 अगस्त, 2012 से लेवल 12 में पदोन्नत कर दिया गया।

सेवानिवृत्ति

वैज्ञानिक

- डॉ. राम कुमार, प्रधान वैज्ञानिक 31 जनवरी, 2018 को परिषद की सेवा पूरी कर सेवानिवृत्त हुए।
- डॉ. आर.एम. खान प्रधान वैज्ञानिक 30 जून, 2018 को परिषद की सेवा पूरी कर सेवानिवृत्त हुए।

तकनीकी

- श्री ब्रहमपाल, तकनीकी अधिकारी (टी–5) 31 जनवरी, 2018 को परिषद की सेवा पूरी कर सेवानिवृत्त हुए।

कुशल सपोर्ट स्टाफ

- श्री कल्लू सुपुत्र श्री चंद्रिका, एस.एस.एस. 28 फरवरी, 2018 को परिषद की सेवा पूरी कर सेवानिवृत्त हुए।
- श्री राम पुत्र श्री फत्ते, कुशल सहायक कर्मी दिनांक 28 फरवरी, 2018 परिषद की सेवा से सेवानिवृत्त हुए।
- श्री शिवदास कुशल सहायक कर्मी दिनांक 28 फरवरी, 2018 को परिषद की सेवा से सेवानिवृत्त हुए।
- श्री महावीर कुशल सहायक कर्मी दिनांक 30 जून, 2018 को परिषद की सेवा से सेवानिवृत्त हुए।
- श्री श्रीराम पुत्र श्री डाला कुशल सहायक कर्मी दिनांक 30 जून, 2018 को परिषद की सेवा से सेवानिवृत्त हुए।
- श्री अतीक अहमद कुशल सहायक कर्मी दिनांक 30 जून, 2018 को परिषद की सेवा से सेवानिवृत्त हुए।

कोर्ट के आदेश के पश्चात कार्यग्रहण

1.	श्री गोविन्द प्रसाद, एस.एस.एस.	04.04.2018
2.	श्री राम खेलावन, एस.एस.एस.	04.04.2018
3.	श्री राजा राम, एस.एस.एस.	04.04.2018
4.	श्री भोलानाथ, एस.एस.एस.	04.04.2018
5.	श्री राम लखन, एस.एस.एस.	04.04.2018
6.	श्री राम स्वरूप, एस.एस.एस.	04.04.2018
7.	श्री देवी दीन, एस.एस.एस.	04.04.2018
8.	श्री राम बली, एस.एस.एस.	04.04.2018
9.	श्री ननकू, एस.एस.एस.	04.04.2018
10.	श्री राम प्रताप, एस.एस.एस.	04.04.2018
11.	श्री शत्रुहन लाल, एस.एस.एस.	04.04.2018

हिन्दी कार्यशालाएँ

संस्थान में 16 मई, 2018 को एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान के पूर्व संयुक्त निदेशक (राजभाषा) डॉ. विजय नारायण तिवारी उपस्थित थे। उन्होंने अपने संबोधन में राजभाषा अधिनियम 1963 और राजभाषा अधिनियम 1976 की जानकारी विस्तारपूर्वक प्रदान की।

संस्थान में 26 मई, 2018 को एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें सहायक निदेशक राजभाषा श्री धीरज शर्मा ने कार्यालयी पत्राचार हिन्दी में कैसे की जाये पर विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की।

प्रकाशन एवं संपर्क : शैलेन्द्र राजन, निदेशक

संकलन एवं संपादन

मनीष मिश्रा, ए.के. भट्टाचार्जी, ए.के. त्रिवेदी, पी.एस. गुर्जर, प्रीति शर्मा, धीरज शर्मा एवं पी.के. शुक्ल

भा.कृ.अनु.प. – केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान

(आई. एस. ओ. 9001 : 2008 संस्थान)

रहमानखेड़ा, डाकघर काकोरी, लखनऊ – 226 101

वेबसाइट : www.cish.res.in, ई–मेल: cish.lucknow@gmail.com

फोन : +91-522-2841022, 24 ; फैक्स: +91-522-2841025